सायोनारा

शाम के सात बजने को आए थे। दूसरे परिवार अपने बच्चों के संग अपने मकानो मे जा चुके थे. पर एक परिवार अभीं भी अपने दो बच्चों के संग होफ मे ही था। इनके बच्चे होफ मे बने रास्तों पर सायकल चला रहे थे। जब तब वो अपनी सायकलों से लुढक पड़ते थे और फिर रोना शुरू कर देते थे। उन्हे पुचकारने उनकी मॉ को उठना पड़ता था। इन्हे चुप करवा कर इनकी मॉ फिर अपने पति के पास जा लौटती थी. जो अपने मकान के सामने बने लॉन मे अपने ब्रीफकेस पर अपना सर टिकाये उठंगा लेटा हुआ था। बच्चो का जब सायकलों से मन भर जाता था. तब वो उन्हे पटक कर फुटबाल खेलना शुरू कर देते थे।

अचानक इनकी नजर एक पानी से भरे टब पर पड़ी। ये टब इस परिवार का न था फिर भी इस टब के पानी से ये दोनो बच्चे खेलने लगे। इनकी मॉ भी इनके बगल मे आ कर खड़ी हो गई। इन बच्चो की उम्र यही कोई पॉच और तीन वर्ष की रही होगी। फूले सेब जैसे गाल. खींची ऑखें .अनुमानतः मुझे या तो ये जैपनीस या फिर चायनिज लगे। पास खड़ी मॉ ने एक दस जेबों वाला हॉफपैंट और नीले सिल्क का एक लम्बा सा ब्लाउज पहन रखा था। पैरों मे उसने एक काले रंग का गद्देदार चप्पल पहन रखा था।

धीरे धीरे अन्धेरा बढ रहा था. पर बच्चे घर जाने का नाम ही न ले रहे थे। पता नही किस भाषा मे इनकी मॉ इन्हे न जाने कौन कौन सी धमकियॉ दिए जा रही थी। इस बीच इनका बाप इनके होफ मे बिखराये सामानों को समेटने मे लगा हुआ था। इनके मकान के सामने एक लाल रंग का बच्चों का ट्राली रिक्सा दीवार से टिका खड़ा था। सारे समेटे सामान इनका बाप इसी रिक्से मे ठूँस आया करता था। उसने भी एक हॉफपैंट और एक आधी बॉह का बुशर्ट पहन रखा था।

किसी तरह बच्चों को मना कर जब उनकी मॉ अपने मकान की ओर बढी. तभी अचानक उसकी नज़र मेरे खिड़की की तरफ उठी। एक धूप वाले चश्मे से उसने अपने बाल पीछे की तरफ कर रखे थे। उसकी भवें. ऑखें और गले की तनी नसें देख कर एक बार मेरा जी धक्क कर रह गया। ये तीन वेगमयी चीजे निकिता के पास भी हुआ करती थी जिससे दिल्ली मे मै नही भी तो बारह तेरह वर्षो पहले मिला था।

मै उसे अपने मकान की ओर बढता देखता रहा।

इस सम्भावना की शून्य गुंजायश होते हुए भी न जाने क्यों मेरा मन कह रहा था कि ये औरत निकिता ही है। मकान के अन्दर जाने से पहले वो एक बार फिर रूकी और मेरी खिड़की की ओर देखी।

खिड़की के पर्दे खींच कर मै अपने ड्राईन्गरूम मे चला आया।

यादें भी बाढों की तरह ही होती हैं। वो किसी भी तरह के अवरोध नही जानती। उनका आगे बढना न तो किसी तरह की दीवार से. थामा जा सकता है और न रोका जा सकता हैः

दिल्ली मे कस्तूरवा गान्धी मार्ग पर के मैक्स म्यूलर भवन के कैन्टिन मे मै अपने दोस्तों के साथ बैठा था कि अचानक उसका मेनगेट खोल कर शीला आती दिखी। उसके साथ एक दुबली पतली लड़की भी थी जिसने एक धूप वाले चश्मे से अपने बाल पीछे कर रखे थे। दोपहर के बारह बज रहे थे। मेरी सुबह की क्लासें लग चुकी थीं।

इशारे से शीला ने मुझे अपने पास बुलाया और उस लड़की से मेरा परिचय करवायाःइसका नाम निकिता है। जापान से दिल्ली हिन्दी सीखने आई है। तुम इसे थोड़ा समय नही दे सकते!बनारस के रहने वाले हो। थोड़ी बहुत हिन्दी तो तुम्हे आती होगी।

एक बार तो मै सकते मे आ गया। सहसा विश्वास ही न हुआ कि इतनी दूर से कोई सिर्फ हिन्दी सीखने इन्डिया आ सकता है। मेरी दूसरी परेशानी स्कैंडलों की भी थी।

निकिता अपनी नजरें नीचे किये चुपचाप मेरे हॉ या ना का इन्तजार कर रही थी। उसने अपने दोनो हॉथों से एक लाल रंग की फाईल पकड़ रखी थी।

शीला को थोड़ा परे ले जाकर मैने उसे अपनी परेशानियॉ बताईःदिल्ली को तुम भी जानती हो। एक बार मैने हॉ कहा नही कि ये डेलियाडस मेरा जीना दूभर कर देंगे। फिर तुम्हे ये जान कर अचरज नही हुआ कि ये लड़की इतनी दूर से इन्डिया सिर्फ हिन्दी सीखने आई है। क्या करेगी ये हिन्दी सीख कर!कौन सा तीर मार लेगी!

ःऐसा भी कौन सा दोष है हिन्दी मे!तुम भी तो जर्मन सीख रहे हो. बड़ी सहजता से शीला ने कहा

अब मै आवेश मे आयाःतुम हिन्दी की इतनी तरफदारी कर रही हो। तुम्हे खुद हिन्दी के कितने शब्द आते हैं!

शीला भड़कीःबस तुम्हारी यही एक बात मुझे अच्छी नही लगती। तुम्हे नौकरी चाहिये. ये सुन सुन कर मेरे कान पकने को आए। कैसी नौकरी तुम्हे दिल्ली मे चाहिये!दलाली की या ढाबों मे बर्त्तन धोने की!बाबा एकाध घंटे इसे समय दो और पैसे बनाओ। कौन सी बहस लेकर बैठ गए!दूसरी बातःमै तुमसे इसे हिन्दी सीखाने को कह रही हूँ. इसके साथ सोने को नही। स्कैंडलों का सवाल ही कहॉ पैदा होता है!

पैसों की मुझे सख्त जरूरत थी।

दिल्ली मे मेरे सर के ऊपर एक छत थी. दो वक्त का खाना था. जरूरत के कपड़े थे. थोड़े बहुत जेबखर्च के पैसे भी थे। ठीक पहली तारीख को मेरे एक दोस्त की बड़ी बहन मेरी बरसाती मे आकर छ सौ रूपये किसी किताब के नीचे दबा कर चली जाती थी। अगर ये उधार के पैसे होते. तो ये मुझे इतना न सालता। मुझे अक्सर ऐसा लगता था कि इन पैसों से मुझे मुझे खरीदा जा रहा है।

आए दिन रह रह कर एक दृश्य मेरी ऑखों के सामने सजीव हो उठता थाःएक अबोध बच्ची मिट्टी का एक पुतला बनाने मे मग्न है। जब ये पुतला बन कर तैयार हो जाता है तो वो बड़ी लग्न से उसे सजाती है। जब वो उसे अपनी पसन्द से सजा लेती है तो वो उसका विवाह रचाना चाहती है। गाजे बाजे. घराती बाराती. घोड़े बन्दूक. गाड़ियॉ शहनाई. मंडप वेदी. पंडित नाई सब कुछ वो अपने हॉथों से बनाती और सजाती है। बस वो इस पुतले के लिए कोई दुल्हन नही बनाती। जब विवाह की सारी तैयारियॉ पूरी हो जाती हैं तो वो खुद ही सज धज कर अपने पुतले की बगल मे जा बैठती है और अपनी तूतलाती आवाज मे पंडित से कहती है ःमुहूर्त्त निकला जा रहा है। तुम जल्दी से अपने मंत्र पढो। मुझे अपने पुतले से अपनी व्याह रचानी है।

कुछ इसी तरह का हठ मेरे दोस्त की बहन के पास भी था जिससे उबरने के लिए मैने निकिता को हॉ कहा था।

अपने होफ मे कई दिनो के बाद फिर मुझे इन दोनो बच्चों की मॉ दिखी। पता नहीं कहॉ अपने बच्चों को घुमा फिरा कर वो घर वापस लौटी

थी।मेरी रसोई की खिड़की के ठीक सामने गाड़ियों के पार्किन्ग की जगह थी।दूर से मै इनके सिल्वर रंग की गाड़ी देख रहा था।पहले वो खुद गाड़ी से बाहर निकली फिर बच्चों के सेफ्टी बेल्ट खोली।छोटा वाला बच्चा गाड़ी से बाहर निकलते ही अपने मकान की तरफ दौड़ा।उसकी मॉ लपक कर उसे पकड़ लाई।फिर वो अपने दोनों बच्चों का हॉथ थामे अपने घर की तरफ बढी।कुछ पलों के बाद मेरी ऑखों के सामने उसकी पीठ भर थी।फिर इतनी दूर से मै उसका चेहरा भी स्पष्ट नही देख सकता था।

बर्लिन मे ये मुझे ठीक ठाक व्यवथित लगे।ढंग के कपड़े. गाड़ी. एक अच्छे इलाके मे मकान. आखिर क्या कर रहे हैं ये बर्लिन मे।बस तीन ही संभावनायें थी।अगर ये वाकई जापान के हैं तो ये अपनी इम्बेसी मे डिप्लोमेटस होंगे या फिर सोनी सेन्टर मे लगे होंगे।तीसरी सम्भावना ःइनमे से कोई किसी ग्रान्ट पर डबलपोस्टग्रेजूयेशन कर रहा होगा।

मुझे ये भी पता न था कि ये परिवार मेरे पड़ोस मे आखिर कब आया!

कभीं न कभी ये औरत मुझे सामने से टकराएगी ही फिर मै हलो कहके उससे उसका नाम पूछ लूँगा।विना जान पहचान के किसी मकान का कौल वेल दवाना मुझे उचित न लगा।

मेरे काम पर आने जाने का रास्ता ठीक इनके मकान के आगे से जाता था।गाहे बगाह मेरी नजरें मकान की खिड़कियों की तरफ उठ जाती थी।खिड़कियों के पर्दे हमेशा ही खींचे रहते थे।एक वार बढ कर मै नामों की तख्ती भी पढ आया जिस पर सिर्फ एक नाम विदेशी था ःहर्श।हर्श इस परिवार का फैमिली नेम था।

इस परिवार के प्रति मेरी जिज्ञासा बढती ही चली जा रही थी।जिस निकिता को मै लगभग भूल चुका था. दिमाग पर जोर डाल डाल कर उसे याद करने का प्रयास करता था।उसका चेहरा तो मुझे धूँधला सा ही याद आता था. पर दिल्ली मे अपना विताया लगभग एक वर्ष एक चलचित्र की तरह साकार हो उठता था।

मेरी जर्मन की सुवह की क्लासें दस बजे खत्म हो जाती थीं और शाम की क्लासें चार बजे शुरू होती थीं।गर्मी के डर से मै दिन भर मैक्स म्यूलर भवन मे ही डटा रहता था।जब तब सोवियत हाऊस भी चला जाया करता था।सोवियत हाऊस से लगा ही एक जैपनीज कल्चरल सेन्टर था. जहॉ हिन्दी की क्लासें दिल्ली यूनिवर्सिटी के कोई गर्ग साहब लेते थे।निकिता उन्ही से हिन्दी सीख रही थी।उसे दिल्ली मे रहते छ महीने हो चले थे।टूटी फूटी हिन्दी वो बोल लेती थी।

मैक्स म्यूलर मे वो ठीक ग्यारह बजे आती थी और वहॉ की कैन्टिन मे कोने की एक मेज लेकर चुपचाप बैठ जाती थी।मै रोजाना उसे कोई न कोई टॉपिक देकर कहने को कहता था।वो अपने टूटे फूटे वाक्यों मे कहना शुरू हो जाती थी।मै रह रह कर या तो उसके वाक्य सही कर देता था या फिर उसका उच्चारण।अपना सारा कुछ कहा वो दूसरे दिन लिख कर भी लाती थी जिनमे की गई गलतियॉ मै सुधार दिया करता था।

इस विधि से मै उसके और उसके परिवार के बारे मे लगभग सब कुछ जान चुका था।

जिस निकिता को मै पन्द्रह सोलह वर्ष का समझे बैठा था. वो वाकई मे बाईस वर्ष की थी।उसके पिता के पास टोकियो मे ही अपनी एक निजी फैक्ट्री थी. जहॉ सोनी के लिए कोई चिप्स वगैरह बनते थे।निकिता की मॉ और उसका बड़ा भाई भी इस फैक्ट्री मे लगे हुए थे।डिफेन्स कॉलनी मे जिस अपार्टमेन्ट मे वो रहती थी. उसका हर महीने का किराया दस हजार रूपया था।ये जान कर एक बार तो मै चकरा ही गया।

जब तब मै भी उसे अपने जीवन की छोटी मोटी घटनायें सुनाया करता था।बड़ी तन्मयता से वो मुझे सुना करती थी।

निकिता मिलने पर या जाने से पहले अपने हॉथ ही जोड़ती थी।एक दिन जाने से पहले उसके जुड़े हॉथ कुछ लम्वे ही जुड़े रहे।

इशारे से ही मैने पूछाःक्या बात है!

जिस मेज से टिका मै खड़ा था. उसी पर नोटों की एक गडी रख कर वो भाग ली।उसके पीछे भागना मुझे अच्छा न लगा. पर कैन्टिन मे बैठे लोगों की नजर इस गडी पर पड़ चुकी थी।इनकी नज़रें मुझसे झेली न गई।मै चुपचाप नोटों की गडी अपने झोले मे डाल कर कस्तूरवा गॉधी मार्ग पर आ गया।एक बड़े से पेंड़ की साये मे बैठा मै अपनी द्विविधाओं से उलझा रहा।नोटों की गडी झोले से बाहर निकालकर गिनने की हिम्मत तो मै न कर सका. पर मेरा मन कह रहा था कि इन पैसों से मै अपने दोस्त की बहन से लिए कर्जे का एक बड़ा भाग अदा कर सकता हूँ।मुझे ये भी लग रहा था कि शीला ने उसे मेरी गरीवी के बारे कुछ ज्यादे ही बढा चढा कर सुना रखा था. वरना एकाध घन्टे की गप्पवाजी के लिए कौन किसे इतने पैसे देता है!

दूसरे दिन निकिता की दी गई गडी मैंने उसे वापस कर दी।पता नही क्यों. मुझे उसके दिए पैसे भीख के लगे।इसे स्वीकारना मुझे अच्छा न लगा।भीख से अच्छी मुझे अपने दोस्त के वहन की मदद ही लगी।

निकिता अवाक रह गई. पर मैक्स म्यूलर मे मेरा जीना हराम हो गया।आए दिन ही बगल से गुजरता हर तीसरा ही यह कहके आगे बढ जाता थाःक्यों भईया जी!जापानी गाय को ठीक से दूह रहे हो न!मुझे बनारसी ठग. बनारसी पंडा. बनारसी चोर और न जाने कौन कौन से उपनाम मिल चुके थे।

मै तो ये सब कुछ चुपचाप सुन लेता था. पर निकिता के लिए ये असहय था।वो दॉत किचकिचा कर रह जाती थी।कई बार मना करने के बावजूद वो कईयों के पीछे भागी और उन्हे जापानी मे ही पता नही क्या क्या कह सुना आई।

अब मै उससे मैक्स म्यूलर की बजाय सोवियत हाऊस मे मिलने लगा. फिर भी लोगवागों के रिमार्क्स और कमेन्टस बन्द न हुए. बल्कि दिन व दिन और घटिया होते चले गए।गोकि मै हर एक सिक्के को खरचने से पहले उसे दसों बार पलटा फेरा करता था फिर भी मुझे जव कभीं निकिता के काम की कोई किताव दिखती थी. उसके लिए खरीद लिया करता था।जब मै उसे ये कितावें भेंट मे दिया करता था तो वो मिनटों मेरा लिखा सप्रेम सिर्फ निहारा ही नही करती थी. बल्कि अपनी गोरी पतली उँगलियों से उन्हे सहलाती भी रहती थी।

कई दफे वो भी सप्रेम लिख कर मेरे लिए उपहार लाई जिन्हे खोलने के बाद मैने उसे वापस कर दिया।न जाने क्यों मुझे उसकी हर लाई चीज भीख की लगती थी।मै खुश था कि मेरे पास दिल्ली मे एक छत और दो जून का खाना था।पहनने को चार जोड़ी खादी के कुर्ते पैजामे थे।निकिता के लाए कैमरे और टेपरिकार्डर का मै करता भी क्या!सिवाय अपने को हास्यास्पद बनाने के!

अचानक बर्लिन मे फिर मुझे अपने होफ के इन दो बच्चों की मॉ शॉ शोशी मे दिखी।

अगस्त का महीना चल रहा था।पेंडो के पत्ते पूरी तरह पीले तो न हो पाए थे. पर होते जा रहे थे।पतझड़ का आरम्भ हो चला था. पर तापमान उतना न गिरा था।वस आए दिन वारिशें हुआ करती थीं।

मै शॉ शोशी के हजारों एक्कड़ों मे फैले पार्क मे घूमने के ख्याल से गया हुआ था।हल्की हल्की झिस्सी पड़ रही थी।पूरा पार्क कोहरों से ढ़ंका पड़ा था।
बारहवें सदी मे एक जर्मन इम्परर फ्रिडरिक द ग्रेट के राज्यकाल मे शॉ शोशी को बसाया गया था।यहॉ वो अपने लश्करों के साथ शिकार खेलने आया करता था।उसके और उसके रानियों,सलाहकारों,नौकर चाकरों के लिए यहॉ न जाने कितने महल या महलनुमा मकान बनाये गए थे और वो भी अलग अलग शैलियों मे।महलो के सामने और पीछे के बरामदों मे न जाने कितनी संगमरमर की तराशी मूर्त्तियॉ खड़ी करवाई गई थी,जो ज्यादेतर औरतों की थी,आदमजात नंगी और एक से एक कामुक मुद्राओं मे।अपने व्यक्तिगत जीवन मे वो होमोसैक्अूल था।
शॉ शोशी मे ऐसी कोई भी चीज़ नही देखी जा सकती,जिसे कलाविहीन माना या कहा जा सकता हो।मौसम चाहे जैसा भी हो,शॉ शोशी टूरिस्टों से भरा ही रहता है।पिछले वर्षो मे मै जब भी शॉ शोशी गया,ज्यादेतर मुझे वहॉ जापानी टूरिस्ट ही दिखे।बर्लिन मे जापानियों की अपनी एक पहचान है।बिना कन्धे से दो चार कैमरे लटकाये ये अपना होटल छोड़ते ही नही है।
शॉ शोशी मे इसी नाम की एक बस हर आधे घंटे पर चलती है जो टूरिस्टों को वहॉ का एक एक कोना दिखाती है।ड्राइवर के दॉये हॉथ मे स्टेयरिंग और बॉये हॉथ मे एक माइक्रोफोन होता है।वो टूरिस्टों को शॉ शोशी का सारा इतिहास सुनाता रहता है।
आज के दिन भी इस बस स्टॉप पर जापानियों का एक दल खड़ा था।इन्ही के बीच मुझे अपने होफ के इन दो बच्चों की मॉ भी खड़ी दिखी।मै ठिठक कर उसे ध्यान से देखने लगा।मेरा घूरना शायद उसे अच्छा न लगा।उसने अपनी नज़रें फेर लीं।बढने को तो मै आगे बढ गया,पर हर कदम पर मेरा विश्वास दृढ होता चला गया कि वो निकिता ही है।
उसके पेशानी पर पड़े बल मुझे ऐसे लगे जैसे वो भी अपने याददाश्त पर जोर डाल रही हो।
घन्टों मै शॉ शोशी के पार्को मे अनमयक्स्र झिस्सियों मे नहाता घूमता रहा।निकिता की एक से एक छोटी बात मुझे याद आती रही।
शीला का अपार्टमेन्ट निकिता के ठीक सामने उसी मंजिल पर था।उसके मॉ बाप उतने धनी तो न थे,पर उसके पास भी डिफेन्स कॉलनी मे एक मॅहगा अपार्टमेन्ट था।उसका भी किराया दस हजार रूपया था।
शीला के पास रति जैसा सौन्दर्य तो न था,पर उसके पास एक कसी देहयष्टि अवश्य ही थी।दिल्ली के हर बड़े होटलों मे उसकी मॉग थी,विशेषकर विदेशी टूरिस्टों के बीच।उसका तंबई रंग उन्हे बड़ा भाता था।
ये जानने के बावजूद भी कि वो वैश्यावृति करती है,मैने उससे अपने सम्बन्ध न तोड़े।वो जब भी मुझे खाने पर बुलाई,मै उसके पास गया।उससे जब भी मिला,पूरी आत्मीयता के साथ मिला,पूरी हृदयता के साथ मिला।सिर्फ एक बार मैने उसका दिल दुखाया।
खाने की मेज पर न जाने कैसे पैंसो की बात चल पड़ी।उन दिनो मै निकिता को नही जानता था।बात भी उसी ने चलाई थीःअपने इन पैसौ से तुम दिल्ली मे अपना गुजारा कैसे कर लेते हो!थोड़े बहुत पैसे मुझसे क्यों नही ले लेते!
मेरे मुॅह से अचानक न जाने क्यों ये निकल गयाःतुम्हारे पैसे मुझे नही फलेंगे।
उसके हॉथ का कौर हॉथ मे ही धरा रह गया।वो रोने लग पड़ी।बड़ी मुश्किल से मै उसे चुप करवा पाया।इस बात का मुझे आज तक दुख है।
जब मै पहली बार निकिता के अपार्टमेन्ट मे शाम के खाने के आमंत्रण पर गया था,तब शीला भी वहॉ थी।मुझे ड्राईन्गरूम मे बिठा कर फिर ये दोनो रसोईघर मे जा घूसीं।जब तब ये दोनो ड्राईन्गरूम मे आकर मुझसे पीने के लिए पूछ जाती थीं।शीला की तरह निकिता ने भी एक सफेद एप्रन बॉध रखा था।ड्राईन्गरूम की साज सज्जा पर एक नजर डाल कर मै वहॉ एक शीशे की मेज पर रखी गौतम बुद्ध की रखी मूर्त्ति निहारे जा रहा था और ये भी सोचे जा रहा था कि हिन्दुस्तान मे जनमे इस ज्ञानी पुरूष का पूर्वी एशिया के तमाम देशों मे इतना आदर और सम्मान है,पर हिन्दुस्तान मे क्यो नही है!हमे उन पर अभिमान है,पर उनके संदेशों को जानने की रूचि क्यों नही है!ऐसा क्या कहके उन्होने करोड़ो लोगों का दिल जीत लिया और हम सनातनियों का दिल वो न जीत पाये!
खाने की मेज पर निकिता ने ही मुझे बताया था कि एक बार सपने मे गौतम बुद्ध ने उससे कहा था कि तुम मुझे इतना मान सम्मान देती हो,मेरी मातृभूमि भी देख आओ।मुझे वहॉ स्वीकारा नही गया,ये सत्य है फिर भी मुझे वहॉ की बड़ी याद आती है।
निकिता दूसरे दिन सुबह ही अपने मॉ बाप के सामने ये जिद़ लेकर बैठ गईःमुझे हिन्दुस्तान जाना है।मै अपने देवता का कहा नही टाल सकती।मै उन्हे निराश नही कर सकती।
खाना शीला का ही बनाया हुआ था।बासमती चावल,साम्भर और चने के बड़े और पीने के लिए दही की खट्टी लस्सी।निकिता ने भी हमारी तरह कॉटे चम्मच के बगैर ही खाया।अगर मुझे ये पता होता कि आज के दिन उसकी तेईसवीं सालगिरह है तो मै भी वहॉ कुछ न कुछ ले ही जाता।सोचा भी कि नीचे जाकर उसके लिए कुछ खरीद लाऊॅ,पर उसने मुझे उठने ही न दिया,उल्टे खुद एक प्लास्टिक का बड़ा सा थैला लाकर मेरे हॉथ मे पकड़ा दियाः
आज मेरा जन्मदिन है।मै जानती हूॅ कि आज के दिन तुम मेरा दिल नही तोड़ोगे।कल पालिका बाजार गई थी।वहीं मुझे तुम्हारी कद का एक आदमी टकरा गया।ये कपड़े उसी के माप हैं।इनमे से एक पहन कर मुझे दिखाओ।आज मुझे ना मत बोलना।
मै चुपचाप उसके खरीदे कपड़े थैले से निकाल निकाल कर देखने लगा।छ जोड़ी कुर्त्ते पैजामे थे और साथ मे दो जोड़ी चमड़े की गद्देदार चप्पलें भी।पैजामो के रंग तो सफेद ही थे पर कुर्त्तो के रंग निराले थे।इनमे से सिर्फ एक ही कुर्त्ता था जिसे पहना जा सकता था।वो हल्के नीले रंग का था।
उसी को लिए मै बाथरूम की ओर बढा।कुर्त्ता मेरे ही माप का था।उसे ही पहने मै ड्राईन्गरूम मे वापस लौटा।एक साथ ही निकिता शीला के संग इस हल्के नीले रंग की सराहना करने लगीं।
बाकी कपड़े थैले मे डाल कर मैने निकिता की तरफ बढाते हुए कहाःइस कुर्त्ते के साथ मै एक पैजामा भी रख लेता हूॅ,ताकि तुम्हारा दिल न टूटे।बाकी तुम अपने पास ही रखो।अपने दोस्तों के लिए तुम यहॉ से कुछ प्रेजेन्टस नही ले जाओगी!
बड़ी सख्ती से उसने कहाःनही।ये कपड़े मैने तुम्हारे लिए खरीदे हैं।इन्हे सिर्फ तुम पहनोगे।
ःपर इनके रंग मुझे पसन्द नही है।
ःठीक है,फिर अपने मनपसन्द रंग मुझे बताओ।कल जाके बदल लाऊॅगी।
दिल्ली मे निकिता को रहते नौ महीने हो चले थे।शीला से उसका परिचय पहले दिन से ही था।अपनी हर छोटी बड़ी परेशानी वो शीला को ही

बताती थी और प्रायः रोज ही उससे मिलती थी। शीला से मिलने मै भी अक्सर जाया करता था। जब उसे मेरे शीला के यहाँ होने का पता चलता था, तो वो भी वहाँ आ जाती थी।

ये सिलसिला लम्बा न चला। मुझसे वो पूर्ववत रोजाना सोवियत हाऊस मे मिलती रही, पर शीला से उसने अपनो सारे सम्पर्क तोड़ लिए। इसे शीला की तरह मैने भी सहज नही लिया। ये अनुमान शीला का ही था कि निकिता मुझसे प्यार करने लगी है और वो मुझे किसी के संग बाँटना नही चाहती। मेरा अनुमान ये था कि उसे शीला के पेशे का पता लग गया है। इन दोनो अनुमानों मे कौन सही था और कौन गलत, इसका उत्तर निकिता के ही पास था। कई दफे निकिता से मैने उसके शीला के प्रति अपनाये रूख को जानना चाहा, पर वो इस विषय पर बात ही करना नही चाहती थी।

निकिता का एक निमंत्रण मुझे और मिला। इस बार मै उसके घर खाली हाँथ न गया, बल्कि कनाट प्लेस से गुड़हल के लाल दस फूल साथ ले गया। बड़े प्यार से वो उन्हे एक बड़े से फूलदान मे सजाई और उतने ही प्यार से उन्हे निहारा।

मेरे लिए एक ग्लास मे बीयर ढाल कर उसने खाने के मेज से लगी एक कुर्सी खीच दी और खुद कीचन मे चली गई।

थोड़ी देर मे वो ड्राईन्गरूम मे आईःआज मै तुम्हारे लिए एक जापानी खाना बना रही हूँ। आज मै तुम्हे ये भी सिखाऊँगी कि स्टिक्स से कैसे खाते हैं।

ःक्या बना रही हो तुम!

ःमशरूम की सूप, स्पागेटी और मछली।

ःये सारे सामान दिल्ली मे मिल जाते हैं!

ःनही। पर हमारे इम्बेसी मे एक छोटी सी दुकान है। वहाँ सब कुछ मिल जाता है।

ःकितना समय लगेगा खाना बनने मे!

ःशायद एक घन्टा। तुम्हारे लिए एक कुर्सी कीचन मे लगा दूँ!

ःनही रहने दो। मै शीला से मिल कर आता हूँ। बहुत दिनो से उससे नही मिला।

अचानक उसका चेहरा सख्त हो गया फिर भी इशारे से उसने अपनी सहमति दे दी।

अभीं आधे घन्टे भी न गुजरे थे कि शीला के दरवाजे की कौल बेल घनघनाई। दरवाजा खोलने शीला ही उठी। दरवाजे पर निकिता खड़ी थी। शीला के नमस्ते बन्दगी का बिना कोई जवाव दिए एक तरह से उसे परे धकेल कर वो सीधे आकर मेरे सामने खड़ी हो गई। उसके तेवर ही बदले हुए थे। गुस्से से उसका पूरा चेहरा लाल हो चला था। मुट्ठियाँ तक भींची हुई थीं

ःआज के खाने पर तुम्हे मैने बुलाया है या शीला ने!

सहज ही मैने कहाःतुमने।

ःफिर तुम यहाँ क्यों बैठे हो!

ःयहाँ क्यों बैठा हूँ!किसी तरह अपनी भाषा संयत रख कर मैने उससे कहाःक्योंकि शीला मेरी सहेली है।

ःफिर ठीक है। आज का खाना भी तुम उसी के साथ खा लेना। मै सोने जा रही हूँ, ये कहके वो तीर की तरह पलटी और अपनी पूरी ताकत से अपने पीछे शीला का दरवाजा बन्द कर गई।

ये एक तरह से मेरा और शीला का अपमान था जिससे मै चाह कर भी ऊवर नही पा रहा था। मन ही मन मैने एक फैसला कर लिया था।

दूसरे दिन अपनी जर्मन की क्लास के बाद बजाय सोवियत हाऊस जाने के मै वापस अपने घर चला आया। तीसरे दिन भी मैने यही किया। चौथे दिन शाम की क्लास के बाद मै अपने एक दोस्त के साथ मैक्स म्यूलर की कैन्टिन मे बैठा चाय पी रहा था कि वो इशारे से मुझे मैक्स म्यूलर के मेन गेट की ओर देखने को कहा, जहाँ निकिता एक बूत की तरह चुपचाप खड़ी थी। मन ही मन मै सोचा कि अगर वो मुझसे मिलना या कुछ कहना चाहती है, तो पास क्यों नही आती। मै पहली चाय खत्म करके दूसरी चाय का भी आर्डर दे दिया। निकिता वैसे ही खड़ी रही। फिर मेरा मन नही माना। मुझे उठना ही पड़ा।

मुझे ये पता न था कि वो मुझे सिर्फ अल्विदा कहने आई है। उसके पास तीन महीने का और वीजा था, पर अब वो दिल्ली मे लम्बा नही रहना चाहती थी।

ःमै आज ही वापस जापान जा रही हूँ। अव मै तुम्हारे देश मे दुवारा कभीं वापस न आऊँगी, इतना ही कहके वो पास ही खड़े एक थ्रीव्हिलर मे जा बैठी। देखते ही देखते थ्रीव्हिलर मेरी आँखों से ओझल हो गया।

निकिता से मेरा सम्बन्ध कुल तीन महीने तक रहा। सोवियत हाऊस मे रोजाना मेरे चार पाँच घन्टे उसके साथ गुजरते थे। हमेशा वो मुझसे बिना किसी आतुरता के मिली और बिना उदास हुए मुझसे अलग हुई। न तो कभीं उसकी आँखें सपनीली हुई और न कभीं उसका व्यवहार ही उन्मुक्त हुआ। सिर्फ एक बार अचानक उसकी आवाज भर्रा गई और उसकी आँखों के कोर नम होने को आए। सोवियत हाऊस की लाईब्रेरी मे हमारे सिवाय कोई दूसरा न बैठा था। मै उठकर अपना एक हाँथ उसके कन्धे पर रख दिया जिसे अपने दोनो हाँथों से पकड़ कर उसने अपना चेहरा छुपा लिया। मिनटों वो सुबकती रही। जब वो थोड़ी सहज हुई तो मै बड़े प्यार से पूछाःक्या बात है!घर की याद आ रही है!

ःइशारे से ही ना कहके उसने अपनी नजरें नीची कर लीं।

ःफिर!

ःजब तब टोकियो वापस लौटने की बात पर मन घबराने लगता है।

ःपर क्यों!

ःतुम मुझे वेहद याद आओगे। कहाँ ढूढूँगी मै तुम्हे!

इसके आगे मै बात बढाना नही चाहता था। उसकी डायरी मे अपने गाँव का पता लिख कर उसे वापस करते हुए कहाःपता नही जर्मनी के किस शहर मे मेरे पाँव टिकेंगे या फिर मेरा जर्मनी जाना सम्भव भी हो पाएगा, मुझे पता नही है। एक अविदित भविष्य है मेरे सामने। पर मै जहाँ कहीं भी रहूँगा, अपने गाँव को कभीं न भूलूँगा और मेरा गाँव मुझे भी नही। जब भी तुम्हे मेरी याद आए, मुझे तुम गाँव के ही पते पर ही पत्र लिखना। वो रिडायरेक्ट होकर मुझे मिलता ही रहेगा।

ःमेरा पता नही लिखना चाहते!
ःक्यों नही.कह कर गगनांचल की एक प्रति मैने उसके सामने बढा दी.जिसके कवर पेज पर उसने अपना पता लिख दिया।
इन पिछले तेरह वर्षो मे न तो मैने उसे कोई पत्र लिखा और न मुझे ही उसका कोई पत्र मिला.पर गगनांचल की ये प्रति आज भी मेरे पास है।बर्लिन मे मुझे चार बार मकान बदलने पड़े।हर बार न जाने कितने सामान मै कूड़े मे फेंका.पर सैकड़ो बार पढी गगनान्चल की ये प्रति आज भी मेरे पास है।
दिल्ली के दौरान शीला का लगाया अनुमान कि निकिता मुझसे प्यार करती है.गलत नही था.पर इस प्यार का प्रतिदान मेरे पास नही था।मै इस प्यार के प्रति अन्जान ही बना रहा।इसी मे मेरी भलाई भी थी।
अब इन तेरह वर्षो के बाद मेरा उसके प्रति प्यार न जाने क्यों रह रह कर करवटें बदलता रहता था।घन्टों मै रसोईघर की खिड़की पर खड़ा हर्श परिवार के होफ मे आने का इन्तजार करता रहता था।उनके मकान से मेरी नज़र हटती ही नही थी।दिल्ली की एकाध फोटो मेरे पास अभीं भी थी जिन्हे लिए मै शीशे के सामने खड़ा हो जाता था और अपने मे आए बदलावों की जॉचे करता रहता था।ऐसा कोई खास बदलाव तो मुझमे नही आया था फिर निकिता ने मुझे शॉ शोशी मे पहचाना क्यों नही!
क्या वाकई मे वो निकिता ही थी!
कई दफे ये हर्श पविार मुझे होफ मे दिखा.पर इतनी दूरी से कुछ भी कहना मुश्किल था।बस एक बार आमने सामने मिलने की बात थी.जिसका मै इन्तज़ार कर रहा था।इसी तरह कई महीने गुजरे कि अचानक एक दिन मुझे अपने लेटरबॉक्स मे एक बन्द लिफाफा मिला जिस पर हिन्दी मे ही सिर्फ प्रमोद लिखा था।घर पर आ कर उसे खोला।सवसे पहले मेरी नज़र पत्र के अन्त मे लिखे निकिता पर पड़ी।मै पत्र पढना शुरू किया...
प्रिय प्रमोद
तुम्हे मैने देखते ही उसी दिन पहचान लिया था.जब तुम अपने रसोईघर की खिड़की पर खड़े थे।ये चश्मा कब से लगाना शुरू किया!मैने सपने मे भी न सोचा था कि तुमसे फिर कभीं मुलाक़ात होगी।कई बार तुमसे सम्पर्क करने को सोची फिर ये भी सोची कि बिना अपने पति को बताये तुमसे मिलना क्या उचित होगा!कई बार तुम्हे घर भी बुलाने की सोची.पर अपने पति और बच्चों की मौजूदगी मे मुझे अपने कमजोर होने का डर लगा।
मै पिछले आठ वर्षो से शादीसुदा हूँ।मेरे पति का नाम हाशी है।वो बर्लिन के जैपनीज इम्बेसी मे काम करता है।इम्बेसी मे ही मेरे पास भी एक छोटी सी नौकरी है।बर्लिन मे हम एक वर्ष से रह रहे हैं।यहॉ हम पॉच वर्ष के लिए लिए आए हैं।
तुमने देखा ही है कि मै दो बच्चों की मॉ हूँ।बड़ी बेटी शूमी है।वो पॉच वर्ष की है।दूसरा बेटा नामि है।वो ढाई वर्ष का है।
तुमसे मै दूसरी बार विदा ले रही हूँ।इस आने वाले विकएन्ड मे हम अपना मकान बदलने वाले हैं.पर इसकी वजह तुम नही हो।हमे इम्बेसी के कैम्पस मे ही एक मकान मिल गया है।
ये जानना चाहते हुए भी कि तुम कैसे हो.शायद मै कभी न जान पाऊँगी.फिर भी तुम अपना ख्याल रखना।
तुम मुझे बेहद याद आते रहे।तुम्हे भी कभीं कभार मेरी याद आई क्या!
मुझे आज तक इस बात का दुख है कि दिल्ली मे मै तुम्हे अपने हॅाथ का खाना न खिला पाई।अगर शीला से तुम्हारे सम्पर्क हैं तो मै तुम्हारे जरिये उससे अपने किये की माफी मॉगती हूँ।
तुम्हारी शिष्याःनिकिता।
आने वाले शनिवार को एक बड़ी सी ट्रक निकिता के घर के सामने सुवह के सात बजे ही आ कर लग गई।ठीक ग्यारह बजे निकिता की सारी गृहस्थी लिए ये ट्रक चल पड़ी।पास ही तिरछी खड़ी इनकी गाड़ी खड़ी थी।निकिता अपने बच्चों को गाड़ी की पिछली सीट पर बिठा कर उनके सेफ्टी बेल्ट बॉधी।गाड़ी का पिछला दरवाजा बन्द करके झटके से उसने मेरे रसोई की खिड़की की तरफ न सिर्फ देखा.वल्कि अपना दॉया हॅाथ भी लहराया.फिर वो गाड़ी मे जा बैठी।
एक गोलाईदार चक्कर काट कर ये गाड़ी मेरे ऑखों से ओझल हो गईः

प्रमोद कुमार सिंह